B.A. Part-III Hist.(H) Paper-VII

Qus.- Write an Essay on Russo-Japanese war?

Ans.- चीन और जापान युद्ध के दस वर्ष बाद ही जापान ने अपने को एक ऐसे शत्रु से घिरा पाया जो चीन से भी अधिक खतरनाक था। वह शत्रु था रूस। वस्तुतः चीन जापान युद्ध के दौरान ही इस युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी। शिमोनोस्की की संधि से लेकिन बाद के वर्षों तक यह स्पष्ट हो गया कि रूस और जापान का हित एक दूसरे से टकराते हैं। रूस और जापान के बीच युद्ध का कारण कोरिया और मंचूरिया था।

मंचूरिया रूस के सीमाप्रदेश से सटा हुआ था। साथ ही आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न था। कोयला, लोहा, सोना यहाँ प्रचुर मात्रा में मिलता था। इस लिये व्यावसायिक तथा अन्य दृष्टिकोण से जापान और रूस अपने-अपने प्रसार में लगे थे।

रूस इसलिये मंचूरिया में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता था क्योंकि मंचूरिया को लेकर कई व्यावसायिक उद्देश्य थे। इसी उद्देश्य को लेकर रूस ने जापान को 1895 में लियाओतुंग से अपना कब्जा हटाने के लिए विवश किया था। कुछ समय बाद रूस ने चीन से एक संधि की, जिसके अनुसार रूस को मंचूरिया में रेलवे लाईन बिछाने का अधिकार रूस को मिला तथा पोर्ट-आर्थर में भी सैनिक किलाबन्दी शुरू कर दी। इस तरह पोर्ट-आर्थर सैनिक अड्डा बना "प्रशान्त" में रूस का सबसे बड़ा सैनिक अड्डा, जहाँ रूस की शक्ति दुगुनी हो गयी। बॉक्सर विद्रोह के बाद रूस ने मंचूरिया पर अपना शिकंजा और भी मजबूत कर लिया। रूस की सेना मंचूरिया रेलवे लाईन की रक्षा के बहाने

पहुँचने लगी थी। उसने कहा कि वह बॉक्सर विद्रोह के बाद अपनी सेना ~~हटा~~ हटा लेगा, परन्तु उसने अपनी सेना वापस नहीं बुलाई। रूस के इन सभी कार्यों से स्पष्ट होता था कि रूस के मंचूरिया में ~~सामरिक~~ राजनैतिक हित थे तथा वह अपने हितों की पूर्ति के लिये वह अपने को ~~सामरिक~~ सामरिक दृष्टिकोण से शक्ति-शाली बनाने का ~~प्रयत्न~~ प्रयत्न कर रहा था।

डॉ. डी. एम. जोन्स के कथनानुसार "उदयमान सूरज के देश की जनता (जापान) के हितों की कीमत पर "निजी माल" तथा चीनी मैत्री एक उसके के साथी हो गये। मंचूरी से व्लादी-वोस्तक तक रेलवे लाइन बिछाने की आज्ञा प्राप्त कर रूस सुदूर पूर्व में अपने विस्तार के लिये पंजा बढ़ाने शुरू कर दिये थे।" चीन ने यह भी कहा है कि मंचूरिया की शतरंज पर अनेक चालों का उद्देश्य राजनीतिक प्रसार था। रूस ~~लिआ~~ लिआओतुंग प्रायद्वीप चाहता था, क्योंकि उसे अपने जहाजी बेड़े के लिये ऐसा बन्दरगाह चाहिये था, जो बारहों महिने खुला रहे और बर्फ न जमे। उसमें रेल बनाई जाना ताकि मंचूरिया पर नियंत्रण हो। स्पष्टतया रूस का ~~नियंत्रण~~ निरन्तर मंचूरिया में अपनी स्थिति को मजबूत बनाना जापान सहन नहीं कर सकता था। अतः जापान ने मंचूरिया में अपने हितों की रक्षा ~~के~~ के प्रयास प्रारम्भ कर दिये थे।

मंचूरिया में जापान का हित - एक तरफ ~~मंचूरिया~~ जापान रूस के मंचूरिया में बढ़ता हुआ प्रभाव को सहन नहीं कर सकता था। वहीं दूसरी ओर स्वयं जापान मंचूरिया पर प्रभुत्व जमाने के प्रयास में था। जापान में हुई व्यापारिक प्रगति ने जापान को अन्य पश्चिमी राज्यों के समान अपने साम्राज्य विस्तार के लिये उत्सुक बना दिया था। इतना ही नहीं

इतना ही नहीं जापान अपनी हुई आबादी को मंचूरिया के प्रदेशों में बसाना चाहता था। शिमोनोसेकी की संधि के समय लिआओतुंग प्रदेश से जापान को जो अपना दावा हटा लेना पड़ा था वह कारण भी रूस के प्रति उसके मन में तनाव था। सबसे बड़ी बात जापान के लिये यह थी कि रूस अपनी सेना मंचूरिया से हटाने का नाम नहीं ले रहा था। मंचूरिया की खनिज और उपजाऊ जमीन जापान के लिये आकर्षण का कारण था। इस तरह रूस और जापान के हित आपस में टकरा रहे थे इससे दोनों के बीच युद्ध की संभावना पहले से ही प्रकट होने लगी थी।

कोरिया — रूस और जापान के संघर्ष का दूसरा कारण कोरिया था। चीन जापान युद्ध के बाद कोरिया पर जापान का प्रभुत्व कायम हो गया था। परन्तु रूस के हस्तक्षेप के डर से जापान ने अपनी प्रभुता बहुत सीमित रखी थी। कोरिया में जापान का कई तरह का हित थे, सामरिक हित व्यावसायिक तथा आर्थिक हित थे। जापान अपने खाने के लिये चावल भी कोरिया से ही मंगवाता था। साथ ही कोरिया एक ऐसा बड़ा बाजार था, जहाँ जापान अपने व्यावसायिक हित को बढ़ा सकता था। कोरिया में वह अपनी सेना की किलेबंदी भी शुरु कर चुका था। इन सब के कारण जापान का कोरिया पर अधिपत्य बहुत आवश्यक था। और जापान किसी भी हालत में कोरिया को नहीं छोड़ सकता था। कोरिया के कारण ही चीन से जापान की लड़ाई हो चुकी थी यों तो परम्परागत रूप से कोरिया भी चीन के अधीन था। चीन स्वयं एक कमजोर राष्ट्र था, इसलिये चीन के संरक्षण के बावजूद

जापान कोरिया में अपने हितों का पोषण कर ... जापान कोरिया में शिमोनोसेकी की संधि के बावजूद जब भी कोरिया में अपनी दिलचस्पी रखने लगा था तो जापान का आशंकित हो जाना स्वभाविक था। इतिहासकार विनाके ने कोरिया में जापान की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है कि -॥ कोरिया उस छुरा की तरह था जिसकी मूठ चीन के हाथ में और नोंक जापान की हृदय की तरफ मुखातिब था।" चीन जैसे कमजोर शत्रु के हाथ में इस छुरे की मूठ थी तब तक जापान निश्चिन्त था क्यों कि वार करने की शक्ति चीन में नहीं थी। किन्तु जब इसकी आशंका हो गयी कि छुरे की मूठ रूस जैसे शक्तिशाली शत्रु के हाथ में जा सकती है तो जापान के सामने "Do or die" का सवाल था।

कोरिया को राजनीतिक दल जापान ने जो कोरिया में प्रचार किया था उसके पक्ष थे लेकिन कोरिया की महारानी इन सुधारों को नहीं चाहती थी। कोरिया की महारानी जापान के बढ़ते हुए प्रभाव से चिंतित थी, तथा जापान के बढ़ते हुए प्रभाव पर रोक लगाना चाहती थी। 7 अक्तूबर 1895 को रात में कुछ जापानियों ने महारानी की हत्या कर दी। इसके कुछ दिन बाद कोरिया के राजा ने जापानियों से आत्मरक्षा करने के लिये रूस के दूतावास में शरण ली और अपना आत्म रक्षा कर सका। जापानियों को यह बात सह्य नहीं थी कि रूस उसके मार्ग में बाधक हो। कोरिया के प्रश्न पर दिन प्रतिदिन जापान और रूस के सम्बन्ध बिगड़ने लगे।

1902-3 के आसपास रूस ने कोरिया में अपना
कब्जा करने का काम तेजी से शुरू कर दिया। जापान तथा रेलवे लाइन तथा तार बिछाना शुरू कर दिया। जापान ने एक संधि प्रस्ताव रखा कि रूस कोरिया में जापान का प्रभुत्व मान ले। जापान मंचूरिया पर रूस का प्रभाव मान लेगा। मगर रूस ने नहीं माना। अतः अब युद्ध के सिवा कोई दूसरा चारा नहीं था।
शेष भाग अगले class में - अवधेश कुमार -